आज की बात

आज नहीं है पर कल है, क्योंकि हमने जिसे आज माना हुवा है वो बीते हुवे कल को याद रख के माना है, क्योंकि हम कहते है कल ‘कल’ था इसलिए आज ‘आज’ है, अगर कल की यादाश्त ना होती तो, तो आज ‘आज’ ना होता, अगर आज ‘आज’ नहीं है, तो आने वाला कल भी नहीं है, क्योंकि हम कहते है आज है वो बीत जाएगा जो आने वाला कल बनेगा, पर अगर हम बीते हुए कल से मुक्त है, तो हमारे लिए कोई आने वाला कल नहीं है क्योंकि तब हमारे लिए आज नहीं है, कल की बात तब आती है जब हमें कुछ करना हो, जब कुछ करना हो तो समय की बात आती है की कार्य कब करे, आज करे की कल करे, हम यह नहीं कहते की यह कार्य बिता हुवा कल आएगा तब करेंगे, पर हक़ीक़त में बात यह है कार्य का चक्र बीते हुवे कल से ही चालू हुवा है, किसी भी मनुष्य का कर्म ना तो आज में है ना तो कल में है, हम कहते है की हम यह कार्य कल करेंगे और यह कार्य आज करेंगे पर,,,आज का कार्य बीते हुवे कल से आया है, आज में वही जी सकता है जो बीते हुवे कल से मुक्त है, और आज़ में जो जिता है उनके लिए कोई आज नहीं है, क्योंकि उनके लिए बिता कल भी नहीं था और आने वाला कल भी नहीं है, क्योंकि ‘ वह ’ कर्म से मुक्त है, ‘ वह ’ अकर्ता है,

प्रश्न : आपने कहा कर्म बीते हुवे कल से आता है, ऐसा कैसे है?

जब ध्यान की अवस्था उपलब्ध होती है तब मन के कोई विचार नहीं होते,,,,जब हम ध्यान में बेठते है तब मन में विचार तो चलते है उस विचार के अगर आप साक्षी कभी हुवे हो,,, आपको साक्षी भाव का कभी अनुभव हुवा हो तो पता चलेगा की वह सारे विचारों का मूल रूप इच्छा है, और जो इच्छा पास्ट में पूरी नहीं हुयी वही इच्छा अपना रूप बदलकर भविष्य का विचार बनती है, क्या आपके पास कभी ऐसा पास्ट है, ऐसा अनुभव हुवा है जिसमें कोई विचार नहीं हो, अगर ऐसा है तो आपका भविष्य में जाना रुक जाएगा, क्योंकि तब वो ऐसा क्षण था,,,,तब आप पास्ट से मुक्त हो गए, इस अनुभव के बाद आपको भविष्य की इच्छा बोज रूप लगेगी, फिर आपके लिए भविष्य के विचार को ऊर्जा देना कष्ट-प्रद होगा, आप बार बार उस अनुभव में डूबना चाहोगे, भविष्य के विचार आपको सूखे लगेंगे, क्योंकि फिर उसके बाद एक नए रस का अनुभव होता है, एक नया ढंग **होने** का उपलब्ध होता है, निर्विचार अवस्था वही है जब इच्छा नए विचार के रूप में पेदा ना हो, हमारा अनुभव है की जब हम भविष्य में कुछ करना **ना** चाहे तब पास्ट की इच्छाएँ याद आती है, पर जब ध्यान की उपलब्धि होती है तब उस वक़्त कोई वक़्त नहीं होता, तब कोई पास्ट नहीं होता, इसलिए कोई **आज** भी नहीं है, और आज भी नहीं है तब कोई कल भी नहीं है,,,,,,तब समय नहीं है।

हम सब सीधे तोर पे तो यह जानते है कि जब कोई हमारी इच्छा बाक़ी रह जाए तो आत्मा नया जन्म लेती है, और मोक्ष तब है जब हमारी कोई इच्छा बाक़ी ना रहे, तो यह जीवन तो हमारी कोई पास्ट की इच्छा से ही पेदा हुवा है,,,सही बात है ना,,,,

तो हमें मुक्त भी पास्ट से होना है ना? और कर्म का मूल स्रोत है इच्छा, यह बात नहीं है की हम ऐक्शन ना करे तो कर्म नहीं होगा, क्योंकि अगर मन में कोई कर्म के लिए विचार भी उठा तो कर्म हो गया, पर जब निर्विचार की अवस्था उपलब्ध होती है तब यह चैन टूट जाती है, फिर जो हम कर्म करते है तब यह अनुभव

हमारे साथ है,,, **जो** निरंतर है, बुद्ध वही है जिसे ख़ुद को पता चले की वो बुद्ध है, जब यह अनुभव होता है तब हमें पता चल जाता है की एक ऐसी भी अवस्था है जहाँ कोई विचार नहीं है, बस लास्ट में लास्ट यही कहा जा सकता है, जब तक किसी को यह पता चले की विचार उठ रहे है तब तक साक्षी भाव सध गया है, पर जब कोई विचार भी नहीं होते तब कोई साक्षी भी नहीं है, तब ना कोई द्रश्य है ना कोई द्रष्टा है, जिसे हम समाधि कहते है, बस यह अनुभव जो साध ले वह कर्म करते हुवे भी मुक्त है, उपनिषद कहते है जिसे यह पता चल गया की वो मुक्त है वही मुक्त है।

Aasthit